International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Volume 01, No. 03, July - September, 2019, pp.165-167

vFk0;oLFkk dh /kjh lqn< ukjh% fyx Hkn D;k\

डॉ. रुक्मिणी देवी*

सार

**e nxk y{eh dkyh ikou pj.kk]
e HkfDr 'kfDr lkUn; ek/kjh d#.kkA**[1]

आर्यो की सभ्यता और संस्कृति के प्रारम्भिक काल में महिलाओं की स्थिति बहुत सुदृढ़ रही है। ऋग्वेद काल में स्त्रियाँ उस समय की सर्वोच्च शिक्षा अर्थात ब्रहमज्ञान प्राप्त कर सकती थी। ऋग्वेद में सरस्वती की वाणी की देवी कहा गया है जो उस समय नारी की शास्त्र एवं कला के क्षेत्र में निपुणता का परिचायक है। पुराणकाल एवं मुगलकाल में स्त्री कुछ बंधनो में जकडी हुई जरुर दिखी है।अंग्रेजों के शासनकाल में भारतीय समाज में एक साथ अनेक तरह के परिवर्तन आये जिसमे नारी की स्थिति को उन्नत करने के अभियान चलाये गये। आर्थिक राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों में नारी की भूमिका पुरुष के बराबर लाने के प्रयास हुए। भारतीय फिल्मों, समाचार –पत्रों तथा तथा साहित्यों मे स्त्री पुरुष सम्बन्धों में बराबरी और स्वतंत्रता को ध्यान में रखकर निरंतर अभिव्यक्तियॉ दी संचार माध्यमों के विकास से भी भारतीय नारी का संपर्क अपने देश में, और बाहर भी तेजी से बढ़ा। इतनी क्षमता रखने के बावजूद भी आजादी की आधी सदी गुजर जाने के बाद भी आज शिक्षा की दृष्टि से लडकी को निरक्षर रखने या लडको को निरक्षर रखने में लडको की तुलना में साधारण सी शिक्षा देने की औपचारिकता है । राजनीति, व्यापार तथा अन्य सार्वजनिक गतिविधियों में पुरुषों की तुलना में उसे पीछे रखने का और पुरुष की तुलना में बराबरी का हक मांगने पर शारीरिक और मानसिक यातना देने का क्रम अभी भी क्यो जारी है ऐसा लिंग भेद आखिर क्यों । ऐसी स्थिति के कारण है आधुनिक कवि ने सुमित्रानंदन पंत जी ने कहा है –

''नारी की होना ही है अब मुक्त धरा पर,
युग कर्म होगा उसकी इच्छा पर निर्भर ।''[2]

कुन्जी शब्दः– *सुदृड नारी के रूप, वैदिक काल, पुराण काल, मुगल काल, ब्रिटिश काल, शिक्षा, ज्ञान।*

प्रस्तावना

भारत के इतिहास में प्राचीनकाल से अज तक अनेक नारी रत्नों– सीता,सावित्री,गार्गी,पद्यिम्नी,दुर्गावति अहिल्या बाई लक्ष्मी बाई आदि ने अपने शोर्य त्याग,ममता,कर्तव्यपरायणता आदि राशियों का अलोक विकीर्ण किया है। भारतीय नारी केवल शक्ति का ही नहीं अपितु अन्य अनके गुणों का भण्डार है ।सृष्टि समाज मानव जीवन की आधारशिला केवल जननी मात्र ही नहीं अपितु शिक्षक प्रशिक्षक निर्देशक पोषक रूप रक्षक भी। सूर्य जैसा तेज ,चन्द्रमा जैसी शीतलता, समुनद्र जैसा गांभीर, पर्वत जैसी दृढता पृथ्वी जैसी क्षमा,आकश जैसी विशालता वृक्षों जैसा त्याग यदि एक ही स्थान पर देखना हो तो भारतीय नारी हदय देखिएं जो हर दृष्टि से सुदृढ है एवं अर्थव्यवस्था की एक धुरी भी है। इसलिए उसका शिक्षित होना एवं पुरूष के बराबर स्थान पाना अति–आवश्यक।

* व्याख्याता, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बीबीरानी, अलवर, राजस्थान।

lqn< ukjh% opLo dk ekxZ

यदि नारी रुपसी अभिराम
रचना
कल्पनाकमनीय
है गढ़ा किस देव ने
सुखदा है, तो यह
गार्गी, मैत्रीयी अरुन्धानी
सती अनुसुइयासी
साध्वी विदुषी

आजादी की आधी सदी गुजर जाने के बाद भी आज शिक्षा की दृष्टि से लड़की को निरक्षर रखने या लड़को की तुलना में साधारण सी शिक्षा देने की औपचारिकता है। राजनीति, व्यापार तथा अन्य सार्वजनिक गतिविधियो में पुरुषों की तुलना मे उसे पीछे रखने का और पुरुष की तुलना में बराबरी का हक मॉगने पर शारीरिक और मानसिक यातना देने का क्रम अभी भी जारी है वह घर और बाहर संस्कृति की पौषिका, अर्थव्यवस्था की धुरी बनने की सामर्थ्य रखने के बावजूद उसे पुरुष से पीछे रखा है।–3

oSfnd dky

आर्यो की सभ्यता और संस्कृति के प्रारम्भिक काल में महिलाओं की स्थिति बहुत सुदृढ़ रही है। ऋग्वेद काल में स्त्रियाँ उस समय की सर्वोच्च शिक्षा अर्थात ब्रहमज्ञान प्राप्त कर सकती थी ऋग्वेद में सरस्वती को वाणी की देवी कहा गया है जो उस समय नारी की शास्त्र एवं कला के क्षेत्र में निपुणता का परिचायक है अर्द्धनारीश्वर की कल्पना स्त्री व पुरुष के समान अधिकारों तथा उनके संतुलित सम्बन्धो का परिचायक है। वेदों में अनेक स्थलों पर रोमाला, धोषल, सूर्या, अपाला, विलोमी, सावित्री, यमी, श्रद्धा, कामायनी, देवियानी आदि विदूषिया के नाम प्राप्त होते है। उत्तर वैदिक काल में भी स्त्रियों की प्रतिष्ठा बनी रही तो उन्हें ब्रहमा (सर्जक) तक कहा गया है। गार्गी, मैत्रीयी, उद्दालिका, विदग्धा आदि विदुषि दार्शनिक एवं आध्यात्मिक चर्चाओं तक मे सफलता से भाग लेती थी।

iqjk.k dky

रामायण –महाभारत में नारी के अधिकार पहले जैसे नहीं रहे। वर्ण व्यवस्था में भी कठोरता आई। नारी घर ग्रहस्थी तक सीमित रहने लगी। तप,त्याग,नम्रता,धैर्य एवं पतिवृत धर्म का पालन करना उनके प्रमुख लक्ष्य मानें गये पति के मन माने अधिकार का स्वत्रंत उदाहरण द्रौपदी और सीता बनी।

eqxy dky

मुगल काल में नारी की स्थिति ओर खराब हुई। कुल के रक्त की शुद्वता,नारी के सतीत्व की रक्षा और हिन्दु धर्म की रक्षा के नाम पर नारी को सामाजिक धार्मिक, बन्धनों में जकड दिया गया कि वह पुरूष की छाया मात्र रह गई विभिन्न कुप्रथाएं पनपने लगी।रजिया बेगम,ताराबाई,अहिल्या बाई वीरांगनाओं ने शासन संचालन में ख्याति प्राप्त की।

fczfV'k dky

अंग्रेजों के शासनकाल में भारतीय समाज में एक साथ अनेक तरह के परिवर्तन आये जिसमें नारी की स्थिति को उन्नत करने के अभियान चलनाये गये। आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों में नारी की भूमिका पुरुष के बराबर लाने के प्रयास हुए।

Lora=rk ukjh dk u;k nkSj

भारतीय फिल्मों, समाचार पत्रों तथा साहित्य में स्त्री पुरुष सम्बन्धों में बराबरी और स्वतंत्रता को ध्यान में रखकर निरंतर अभिव्यक्तियां दी। संचार माध्यमों के विकास से भी भारतीय नारी का संपर्क अपने देश में और

बाहर भी तेजी से बढ़ा। स्वतंत्रता के बाद नारी शिक्षा को लेकर विशेष प्रयत्यन किये जाने लगे। राजनैतिक ,आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों में नारी की भूमिका को पुरूष के बराबर लाने का प्रयत्न होनें लगा।

''ज्ञानेश्वरी गार्गी, विद्योतमा, तिलोत्तमा, कैकेयी, रजिया सुल्ताना, नूरजहां, जीजा बाई, अहिल्या रानी लक्ष्मीबाई सरोजिनी नायडू इंदिरा गाँधी आदि का उदाहरणए देकर हम भारतीय समाज में नारी के व्यक्तित्व की उत्कृष्टता और पुरुष के समान उसकी सामर्थ्य का बखान कर रहे है।'' 4

किसी भी देश की सामाजिक स्थिति का वास्तविक निर्माण उस देश में स्त्रियों की दशा पर निर्भर करता है आर्थिक व सामाजिक परिवर्तन समय समय पर बड़ी तीव्र गति से होता रहा है। परिवर्तन के इस दौर मे भी कुछ भारतीय महिलाओं ने राजनैतिक तथा धर्म के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया जिसमें आपाला घोष तथा मुद्रा का नाम विशेष रुप से उल्लेखनीय है।

इसी के साथ साथ बताना चाहूँगी कि ;kKiyD; i:fl) n'ku 'kkL=h Fk। एक बार उन्होने ज्ञानी लोंगों को शास्त्रार्थ की चुनौती दी। छः लोग शास्त्रार्थ के लिए आगे आये जिनमें गार्गी के अलावा बाकी पुरुष थे। गार्गी उस समय के प्रसिद्ध दर्शन शास्त्री की पुत्री थी स्वयं दर्शन में पारंगत उसने याज्ञवलक्य के साथ गहन शास्त्रार्थ किया जैसे जैसे गार्गी के प्रश्न तीखे होते गये, शास्त्रार्थ के दौरान विकट स्थिति पैदा होती चली गयी अन्त मे गार्गी के प्रश्नों के जवाब देने की बजाय याज्ञपलक्य ने शास्त्रार्थ बंद करने के लिए ब्राहम्णवादी पुरुष सत्ता के अंदाज में कहा '' आरी ओ गार्गी !अपनी खोजबीन को ज्यादा दूर तक मत ले जाओ, अथवा तुम्हारा सर धड़ से अलग कर दिया जायेगा। 5

शिक्षा मानव चेतना के लिये न केवल स्वयं में एक उजास है बल्कि वह अन्य वस्तुओं को देखने और उन्हे सही दिशा में व्यवस्थित करने के लिये उपयुक्तम मानवीय साधन भी है। यदि गरीबी की रेखा से नीचे जीने वाले व्यक्ति एक नारी को शिक्षित कर दिया जाय तो समाज की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक चेतना और संरचनाओं में व्यापक परिवर्तन की सभावनाये है। लेकिन fo'oukFk f=ikBh u: ,d LFkku ij dgk gS–''यह सूची कितनी अपूर्ण है इसका पता इसी बात से लग सकता है कि इसमे मीरा , मुक्ताबाई, सहजोबाई जैसी प्रसिद्ध भक्त कवयित्रियों का नाम ही नहीं ।'' 6 इन पंक्तियों से यह स्पष्ट होता है कि नारी के सुदृढ होनें के साथ–साथ उसके जागरूक रहने की आवश्यकता है। जिससे वह सही समय पर सही स्थान पर अपनी क्षमता को उजागर कर सके।

lanHkZ xzUFk lwph

1 पंत ग्रंथावली, भाग –2, स्वर्णधूलि, मानसी, ले. पंत, पृ. 342

2 पंत ग्रंथावली, भाग –2, युगवाणी–नारी, ले. पंत, पृ. 100

3 पंत ग्रंथावली, भाग –7, आस्था, मानसी, ले. पंत, पृ. 282

4 पंत ग्रंथावली, भाग –2, ग्राम्या–ग्राम, ले. पंत, पृ. 13

5 पंत ग्रंथावली, भाग–1, वीणा, ले. पंत, पृ.84

6 सम्मेलन पत्रिका शोध त्रैमासिक भाग 93 संख्या 3 पृष्ठ –125

❖◆❖